आपातकाल में सृजन फुलवारी

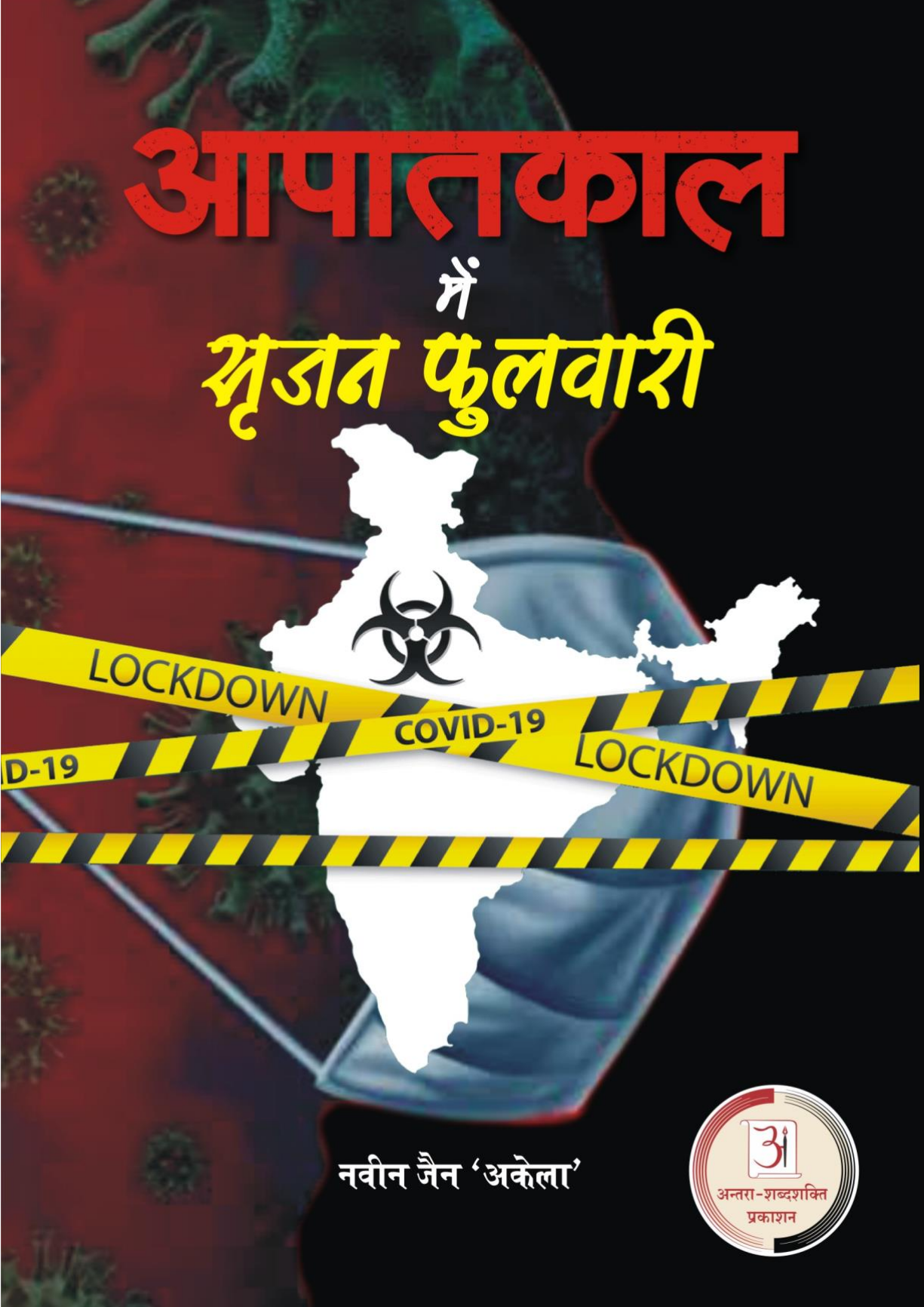

नवीन जैन 'अकेला'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

नवीन जैन 'अकेला'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-136-7
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020 नवीन जैन अकेला
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY NAVEEN JAIN AKELA
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	सब्र	6
2.	अहंकार	7
3.	कांटे	8
4.	पानी और प्यास	9
5.	सन्नाटा	10
6.	स्त्री	11
7.	जनता कर्फ्यू	12
8.	रंग	13
9.	रे मनवा धीर धरो	14
10.	करो कुछ उपाय	15
11.	ये बंधन	16
12.	दादी कहती थी	17
13.	रिश्ते	18
14.	बिंदु से शून्य तक	19
15.	घर में रहने वाला	20
16.	दीप जले	21

सब्र

सब्र का बांध फूट पड़ता है जब
झूठें और मक्कारों की
महफ़िल में उड़ाया जाता है
सत्य और निष्ठा का उपहास
जब कौओं की कांव-कांव में दब जाती है
कोयल की मधुर कुहूक
जब गंदगी से बजबजाते गंदे नाले
खड़े करते हैं सवाल
नदियों की पवित्रता पर
जब उपलब्धियों के
मद में चूर इंसान
घोंट देते हैं मर्यादाओं और
भावनाओं का गला
और तब टूट जाता है
प्रकृति का सब्र भी
इंसान के दोगलेपन से
त्रस्त होकर फेलती है
महामारियां आते हैं भूकंप
ये प्रकृति का प्रतिशोध भी है
और हमारे पाप कर्मों की सजा भी
सावधान अब न हुये सचेत
तो निश्चित है मानवता का अंत।

अंहकार

अंहकार
की तिजोरी में
आत्मा को कैद करके
तुम उम्मीद करते हैं
आत्मियता की
आत्मा विहीन
तुम्हारा तन-मन
बन चुका है एक मशीन
जो दिन रात तुम्हें
आत्ममुग्धता की और
ढकेल रहा है
दूर होते जा रहे हो तुम
स्वाभाविक जीवन से
मुक्त करो अपनी आत्मा को
ताकि तुम
स्वछंद विचरण कर सको
प्रेम और समर्पण के
नील गगन पर
ताकि संतुष्ट हो तुम्हारी आत्मा
परमात्मा को पाकर।

कांटें

चुभते हैं रिश्तें
कांटों की तरह
जब स्वार्थ की
कंटीली झाड़ियों में
उलझ जाता है
अपनापन
खुशियां
तार-तार हो
जाती है
सबकुछ
लगने लगता है
नकारात्मक
जब मन ऊग आते है
नफ़रत के नुकीले कांटें
कांटे
महफूज़ रखते हैं फूलों को
लेकिन
फूलों को
खुशी मिलती है
खुशबू लुटाने में
पंखुरी-पंखुरी
चमन को सजाने में!

पानी और प्यास

जुदा
कैसे हो सकते हैं
हम-तुम
हम घुले हुये है
पानी में प्यास
की तरह
जीवन में श्वास
की तरह
रिश्तों में विश्वास
की तरह
समय चक्र
दूर कर सकता है
हमें
कुछ पल के लिए
लेकिन
जुदा नहीं हो सकते
हम तुम
हमारा जीवन गुथा हुआ है
एक-दूजे संग
रस्सी में बट की तरह।

सन्नाटा

अपने
हथियारों के दम पर
चीखने वाले बाहुबली आज सदमे में हैं

अपनी भौतिक
चमक-दमक के
नशे में झूमते,
सूरज को आंख दिखाने वाले
जुगनुओं के दिमाग
कुंद हो गये है

सन्नाटे में है
महाशक्तियां
ये चेतावनी है
हमारे प्रकृति विरुद्ध
निरंकुश आचरण को
अब भी न संभले
तो सहना होगा हमें
स्थाई सन्नाटा।

स्त्री

मां हूं
तो ममता की
मूरत कहते हो
बहन हूं
तो त्याग की
देवी कहते हो
पत्नी हूं
तो अपनी
दासी समझ लेते हो
कोई रिश्ता नहीं
तो अबला कहकर
नोचते खसोटते हो
मुझको मंदिर सजाकर
देते हो मुझे शक्ति का नाम
और सड़कों पर, चौक चौराहों पर
टूट पड़ते हो जंगली
कुत्तों की तरह
बहुत हुआ
मत दो अब मुझे कोई उपमा
मैं स्त्री हूं स्त्री ही रहने दो मुझे
जैसे तुम पुरुष
सिर्फ पुरुष हो।

जनता कर्फ्यू

जनता का, जनता के लिए, जनता सुरक्षा चक्र!
ऐसा रचना है चक्रव्यूह
कि टूट जाते वायरस का
सारा गुमान सारा फक्र
एक दिन घर में बिताओ
करो प्रार्थना ईश्वर से
हे मालिक
इस कोरोना वायरस से, मानव सभ्यता को बचाओ
जीवन की आपाधापी में नहीं मिला समय
परिवार के संग समय बिताने का
ये अवसर है परिवार के संग
रहने का खिलखिलाने का
न घबराना है
न अफवाहों से डरना है
सावधान, सतर्क और स्वच्छ रहकर
हमें वायरस का मुकाबला है करना
तो करो प्रतिज्ञा
हम सब पूरी सावधानी सतर्कता और पूरी शक्ति से
कोरोना वायरस को देश से भगायेंगे
भारत की पावन धरा को कोरोना से बचायेंगे!

रंग

नहीं उतरता रंग तुम्हारे प्यार का
यही तो धन है मेरे सुख संसार का

रेशमी जुल्फों के साए में रहने दो
आंखों को मदिरा का प्याला कहने दो

डूब जाऊं या पार लगूं कुछ होश नहीं
प्यार के सागर में मुझको अब बहने दो

मन दीवाना तेरे रूप श्रृंगार का
नहीं उतरता रंग तुम्हारे प्यार का

पायल की छन-छन की शान निराली है
होठों की लाली फूलों की डाली है

तुम बसंत,तुम सावन, तुम फागुन मेरे
तुमसे ही तो सांसों में हरियाली है

मोल तो समझो तुम मेरी मनुहार का
नहीं उतरता रंग तुम्हारे प्यार का!

रे मनवा धीर धरो

धीरज से टल
जायेगा संकट
दूर होंगे सब
राहों के कंटक
दम गंभीर भरो
रे मनवा धीर धरो
सुख-दुख की है
सारी माया
सांसों बिन
माटी ये काया
सृष्टि की पीर हरो
रे मनवा धीर धरो
मूक पशु-पक्षी
न मारों
शाकाहार जीवन
में धारो
जीवों से प्रीत करो
रे मनवा धीर धरो!

करो कुछ उपाय

सच्चाई अब गुनगुनाने लगे हैं
झूठे भी सच को निभाने लगे हैं

समय को जो मुट्ठी में रखते थे यारों
समय को वो शक्ति बताने लगे हैं

वफ़ा से नावाकिफ हरदम रहे जो
जमातें वो अपनी जमाने लगे है

गद्दारी के वायरस कोरोना से घातक
गटर में ये फिर कुलबुलाने लगे है

उन नापकों का अब करो कुछ उपाय
अकेला जो घर को जलाने लगे है!

ये बंधन

न मोह का है, न ममता का
ये बंधन है
भारत के आम आदमी की देशभक्ति का
एक युद्ध
जो हमें लड़ना है घर में रहकर
कुछ सुविधाओं का आभाव
आजादी की कमी सहकर
हम जीतेंगे
दुनिया में फैली बीमारी से
जीतने का संकल्प लेकर
जैसे नदी पहुंच जाती है
सागर तक राहों
की लाख मुश्किलें सहकर
हमें तोड़ना है भय की
दीवारों को और खड़ी करनी हैं
आत्मविश्वास की मजबूत दीवारें
जिनके बंधन में रहकर हम
अपना और अपने देश का भाग्य संवारे
इसे बंधन न समझो ये तो
मां भारती को समर्पित
हमारे कर्तव्य, हमारे प्रेम
हमारे सब्र का पावन चंदन है
ये बंधन तो प्यार का बंधन है!

दादी कहती थी

दादी
कहती थी
परियों की कहानी
जिसमें होते थे
भयंकर दानव
सुन्दर राजकुमारियां
न्यायप्रिय राजा और
दयावान रानी
भयंकर जंगल
हाथी घोड़ा भालू
बोलने वाला तोता
गाने वाली मैना और
चालाक बन्दर कालू
जंगल,पर्वत,झरनें, नदियां
दादी की कहानी में
चार चांद लगाते थे
दयावान जिन्न सबके
मन को लुभाते थे
चंदा मामा, चांद-तारे
दुनिया की सैर हो जाती थी
जब दादी कहानी कहती थी
बहुत मीठी नींद आती थी!

रिश्ते

समय नहीं रुकेगा
तुम्हारे रुक जाने से
जिंदगी नहीं थमती
मौत के बहाने से

दुख जब बीतेगा तो
सुख चला आयेगा
क्यों दुखी होता है मानव
इस आने जाने से

ये धन, ये शौहरत
बुलबुला है पानी का
क्यों डरता है सदा
इसके फूट जाने से

भाग्य से मिलती है ये
जिंदगी इंसान की
डरता क्यों है पगले
किसी के काम आने से

अपनों को दगा देना
सीखा नहीं अकेला
कुछ घटता नहीं बंधु
रिश्ते निभाने से!

बिंदु से शून्य तक

एक
बिंदु से प्रारंभ हुआ जीवन
समय के पथ
और
सांसों के रथ पर सवार होकर
निरंतर गतिमान है
भवसागर से
पार होने के लिए
सवार होना होगा हमें
मर्यादित कर्मों की नाव पर
इस नाव पर बांधना होगा हमें
दृढ़ संकल्प की पतवारें
मन को सज्ज करना होगा
त्याग, समर्पण, कर्तव्य, सच्चाई
और स्नेह के सुगंधित पुष्पों से
तब हम मुकाबला कर पायेंगे
झूठ, कपट, अनाचार,
और स्वार्थ की प्रचंड लहरों का
तब हमें हासिल होगा
वो विराट शून्य जिसे कहते
मोक्ष द्वार।

घर में रहने वाला

घर में रहने वाला ही तो देश बचायेगा
तुम घर से न निकलो यार कोरोना घात लगायेगा
धर्म-कर्म और काम जरुरी
सतर्क रहके निपटाना
दस्तानें हाथों में पहनना
मुंह पर मास्क लगाना
सावधानी का मंत्र ही हमको जीत दिलायेगा
तुम घर से न निकलो यार कोरोना घात लगायेगा
नमस्कार है महामंत्र
ये सिद्ध पुरुष कहते है
नियम बद्ध आचरण हो तो
रोग दूर रहते हैं
नेक विचार हो सबके तो संकट टल जायेगा
तुम घर से न निकलो यार कोरोना घात लगायेगा
देश हमारा धरा हमारी
हम सब बने सिपाही
अदृश्य दानव को मारने
मिलकर लड़े लड़ाई
देश प्रेम का भाव हदय में जोश जगायेगा
तुम घर से न निकलो यार कोरोना घात लगायेगा!

दीप जले

दीप जले उजियारा फैले
आओ सभी प्रयास करें
तम दानव का बध करने
कण-कण में उजास भरे
विश्वास की शक्ति ने ही तो
सागर पे सेतु बनाया था
नन्ही गिलहरी ने भी तो
अपना कर्तव्य निभाया था
ये कठिन समय कट जायेगा
निर्भीक रहे हरगिज़ न डरें
तम दानव का बध करने
कण-कण में उजास भरे
घर-घर संकल्प आलोकित हो
हर दर पर दीप जले प्यारा
ये तम का जहर मिटे निश्चित
बहे प्रयत्नों की अमृत धारा
जब अखिल विश्व अकुलाया हो
बने विश्वगुरु संताप हरे
तम दानव का बध करने
कण-कण में उजास भरे!

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

नवीन जैन 'अकेला'

मण्डला (म.प्र.)

E-mail - naveen05jain@gmail.com

Mobile - 6261915557. 7089960209

आज पूरी दुनिया संकट में एक वायरस ने बड़ी-बड़ी महाशक्तियों को भी बौना साबित कर दिया। पूरी दुनिया घरों में कैद है ऐसे में कलमकार की कलम चल पड़ती है। मैं अपने आसपास और देश देशांतर की गतिविधियों पर लिखने को उत्सुक रहता हूं। सभी बिषयों पर लिखने की कोशिश करता हूं। लेखन का उद्देश्य कभी रोते को हंसाना तो कभी समाज के लिए कुछ कर गुजरने की इच्छा। मैं अपने प्रयत्न में कितना सफल हूं ये पाठक जाने मुझे अच्छा लिखना है सच्चा लिखना है इसी भावना से सृजन चल रहा है।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-136-7

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/

Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/